REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

शेखर जोशी की कहानियों में अकेलापन

डॉ.दुर्गावती सिंह
असि.प्रो. हिंदी , आर्य महिला पी.जी. कालेज, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना :

बढ़ते हुए भौतिकता ने मनुष्य के स्नेह और अपनत्व को खत्म कर दिया है। उद्योगों, यंत्रों और कारखानों के कारण उपयोग की विभिन्न प्रकार की नयी वस्तुयें बनी हैं परंतु जिस मनुष्य के लिए बन रही है वह धीरे–धीरे अकेला पड़ता जा रहा है। पुराने मानव मूल्य अपने अर्थ के लिए रौंद दिये जा रहे हैं। सबसे भयावह बात यह हो रही है कि आदमी की संवेदनहीनता ने अपने छोटे–बड़े के आपस के संबंध को धीरे–धीरे समाप्त करती जा रही है। इस तरह मनुष्य के जीवन के अस्तित्व पर एक बड़ा संकट आ गया है। यही मुख्य कारण है कि वह एकाकी जीवन जीने के लिए मजबूर हो गया है। इस भूमण्डलीकरण के युग में मनुष्य के एकाकीपन को केंद्रित करते हुए आलोचक कुमार कृष्ण लिखते हैं,''आज के यांतित्रक युग में व्यक्ति भीड़ में भी अकेला पड़ गया है। उँची आंकाक्षाएं पूर्ण नहीं होती है। सपने विखर जाते है। वह टूट जाता है। इस प्रकार की विभिन्न कहानियाँ है जिनमें अजनबी शहरों में परिचय की आकांक्षा लिए हुए युवक भटकते है। किंतु उन्हें मिलता है अपरिचय, भटकाव और अकेलापन। वे स्त्रियाँ जो न किसी पुरुष की बन सकी, न किसी को अपना बना सकी। कभी पारिवारिक बोझ के कारण और कभी मानसिक मोह बंधनों के कारण अकेलेपन और कुण्ठा के भार को ढोने के लिए विवश है। संपर्कों के तलाश में वे पराजित मनोभाव के लिए निराशा और विषाद में घिरी रहती है।''[1]

कथाकार शेखर जोशी की कहानी 'दाज्यू' इसका एक अच्छा उदाहरण है,''मनुष्य की भावनाएं विचित्र होती हैं। निर्जन, एकांत स्थान में निस्संग होने पर भी कभी–कभी एकाी अनुभव नहीं करता। लगता है इस एकाकीपन में भीसब कुछ कितना निकट, कितना अपना है, परंतु इसके विपरीत कभी–कभी सैकड़ों नर–नारियों के बीच जनरवमय वातावरण में रहकर भी सूनेपन की अनुभूति होती है। लगता है जो कुछ है वह पराया है कितना अपनत्वहीन पर यह अकारण ही नहीं होता। इस एकाकीपन की अनुभूति, इस अलगाव की जड़े होती हैं।''[2]

इस एकाकीपन का चित्रण हमें शेखर जोशी की चर्चित कहानी 'कोससी का घटवार' का मुख्य पात्र के माध्यम से देखने को मिलती है,''कभी–कभी गोसाई को यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, जिंदगी पर साथ देने के लिए जो अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है जिसे अपना कह सके ऐसे किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं। पालतू कुत्ते–बिल्ली का स्वर भी नहीं।''[3]

1
2
3

विरक्ति और विद्रोह के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हुए मार्कण्डेय जी लिखते हैं कि बार–बार जैसे लगता है लेखक किसी तराजू के कहीं बीच से साधे बैठा है जिसमें टूटने और जुड़ने को विद्रोह और विरक्ति को जीवन और मरण को तोला जाना है। कभी–कभी लगता है कि उसकी यह जिज्ञासा कहीं उसके स्वयं के जीवन में कील की तरह गहरी गड़ी हुयी है, जिसमें उसकी कहानी ही नहीं वरन् उसके शिल्प–विधान तक को एक दुहरी प्रक्रिया को ठोस माध्यम बना दिया है। जहाँ वह वहाँ का नहीं है कहीं बाहर से आ गया है। लेकिन ऐसा नहीं कि वह किसी बुरी जगह पर है।''[4]

इस अकेलापन का चित्रण हमें शेखर जोशी की चर्चित कहानी 'कोसी का घटवार' का मुख्य पात्र के माध्यम से देखने को मिलती है,''कभी–कभी गुसाई को यह अकेलापन काटने लगता है। सूखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं है जो जिंदगी भीर साथ देने के लिए जो अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है, वही जिसे अपना कह सके। ऐसे किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं। पालतू कुत्ते–बिल्ली का स्वर भी नहीं।''[5]

जोशी जी की अगली कहानी 'संवादहीन' है जिसमें अकेलपान का दृश्य हमें देखने को मिलता है। 'संवादहीन' कहानी का मुख्य पात्र 'ताई' के जीवन में भी सूनापन है वह इस अकेलापन को महसूस करती है। शेखर जोशी 'ताई' के माध्यम से कहते है कि 'ताई' ने अपने जीवन में अच्छे दिन भी देखे है। पूत–परिवार, बहू–बेटी, नौकर–चाकर, गाय–ढोर क्या नहीं था, देखते–देखते क्या से क्या हो गया इस परिवार में। बहू–बेटियों अपने–अपने हाथ पीले कराकर अपनी गृहस्थी में रम गयी, पराया धन तो पराया होता है किसके भरोसे कारबार संभालता। धीरे–धीरे सब पराये हाथों में चला गया। जब खेती–बारी नहीं, कारबार नही तो नौकर–नौकरानी किस दम पर टिकते। अपनी अकेली जान के लिए 'ताई' दो जून काप एक जून चूल्हा फूँक लेती, व्रत–उपवास के बहाने चूल्हा चौका टाल जाती है। पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही, पर सुने घर की भाँय–भाँय जैसे काटने को दौड़ती थी।''[6]

जोशी जी की एक कहानी 'स्वप्न देश की एक उदास शाम' है। यह कहानी 'देबिया' नाम से भी प्रकाशित हुई है। इस कहानी में देबिया के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। देबिया ने अपने जीवन में बहुत से धंधे किये, लेकिन कोई धंधा चला नहीं। वह हमेशा अपने एवं समाज से संघर्ष करता रहा। निम्न जाति से होने के नाते उसका व्यवसाय नहीं चलता, बल्कि जो पूँजी लागत वह भी धीरे–धीरे डूब जाती है। अपने सूनेपन एवं अकेला जीवन के लिए वह जीवन में अब विवश हो गया था। देबिया के जीवन में इस सूनेपन का दृश्य इस कहानी में चित्रित है,''तेज हवा चलने लगी थी। वातावरण में चीड़ के पत्तों की साँय–साँय की अपेक्षा अन्य कोई स्वर नहीं सुनाई दे रहा था। दूर तलहटी में गाँव के निकट बाँज के पत्ते उलट–उलटकर अपनी हथेलियाँ चमका रहे थे। देबिया का नित्य का अनुभव था कि आंधी के बाद जरूर थोड़ा बहुत पानी गिरता है और सब सूनापन वन में अकेले बैठकर ग्राहकों की प्रतीक्षा व्यर्थ ही रहती है।''[7]

सुप्रसिद्ध कथाकार नासिरा शर्मा अकेलान के संदर्भ में लिखती हैं,''एकाकीपन की पुरानी परिभाषा अविवाहित होना है परंतु नई परिभाषा का अर्थ है एक नई जिंदगी की शुरूआत, एक नयी स्वतंत्रता का एलान, जिसमें सब कुछ है मगर, प्रताड़ना, अपमान, असुरक्षा,आँसू, आह, विश्वास नहीं है जो अंजाम है अच्छा या बुरा, वह आपका अपना हिस्सा है क्योंकि उसको आपने स्वयं चुना है।''[8]

संदर्भ :

1.कुमार कृष्ण, कहानी के नये प्रतिमान, पृ029
2.शेखर जोशी, संकलित कहानियाँ, पृ0 52

4
5
6
7
8

3.शेखर जोशी, संकलित कहानियाँ, पृ0 69
4.मार्कण्डेय, हिंदी कहानी :यथार्थवादी नजरिया, विद्रोह या विरक्ति की कथा, पृ066
5.शेखर जोशी, संकलित कहानियाँ, पृ0 69
6.शेखर जोशी, संकलित कहानियाँ, पृ0 52
7.वही, पृ0 28
8.नासिरा शर्मा, समकालीन लेखन एवं संवेदना, पृ0 233